

किसान भाइयों को सकारा

ऐसा फील करें कि पैर के अँगूठे से शक्ति..... प्रकाश के रूप में..... शरीर में ऊपर की ओर आ रही है..... आते-आते सारी शक्ति..... बस सिर में रह गयी है..... और अब सिर्फ बिन्दू रूप में..... सारा शरीर शान्त..... बिल्कुल शान्त..... अब फिर से सारी शक्ति..... पूरे शरीर में फैलायें..... अब फिर से समेट लें..... क्लीयर देखें कि आत्मा अलग शरीर अलग..... और अब चलें एक ऐसे ग्रामीण स्थान पर जहाँ खेतों के बीच में कुछ किसान सभा लगी हुई है..... दूर खड़े होकर किसानों की बातें सुने..... कर्ज लेकर फसल की बुआई की थी..... घर में अनाज का एक दाना नहीं..... पढ़ने लिखने की उम्र में बच्चे फटे हाल घूम रहे हैं..... बूढ़े माँ-बाप की लाइलाज बीमारी का दर्द..... मन करता है कि जीवन ही खत्म कर लूँ जैसे किसानों की बिना पानी फसल सूख रही है..... वैसे उनके शरीर भी सूखे जा रहे हैं..... और सूख रहा है महकमें में बैठे लोगों के आँखों का पानी..... मजबूरी का दर्द देखें..... गरीबों का जीवन महसूस करें..... अब ऊपर की ओर देखें..... और उस महाज्योति जगत के पालक को..... नीचे उतरते हुए देखें..... और एकदम शरीर के ऊपर आकर..... अपनी समस्त शक्तियों की छत्रछाया बन ठहर गयी..... सारी शक्ति मुझ आत्मा में समाहित हो रही है..... और महसूस करें..... कि मेरा पूरा शरीर शक्ति से भरपूर हो रहा है..... अंग-अंग से शक्तियों की किरणें निकल रही हैं..... अब उन किसानों की आत्मा को देख उनसे बात करें..... कि तुम इतना परेशान क्यों होते हो..... जिसने जीवन दिया है वही जीवन चलायेगा भी..... क्या तुम्हें याद नहीं..... उसको पालनहार भी कहते हैं..... तब कमजोर हो रहा है पर मन को कमजोर मत करो... .. सरकार के पास भी तुम्हारे लिए बहुत योजनाएँ हैं..... तुम शान्त होकर पता करो..... और सिर्फ एक ही धंधा न करो सृजनहार हो..... तुम्हारे पास अनेक हुनर हैं..... याद करो अपने पुराने जमाने को..... गाँवों में क्या-2 बना लेते थे..... जो अँग्रेज लोग भी आश्चर्य खाते थे..... तुम क्या नहीं कर सकते हो..... इतनी जल्दी हिम्मत क्यों हारते हो..... आशा को विश्वास का सहारा बनाओ..... सिर्फ प्रकृति के सहारे नहीं रहो..... प्रकृतिपति का भी

सहारा ले सकते हो..... अब एक-एक के सिर पर पड़े प्यार से हाथ रखें.....
और पवित्रता, सुख और शान्ति की किरणें..... उनमें प्रवाहित करें..... और
उनके चेहरे से सन्तुष्टि रूपी खुरी को महसूस करेंऔर अब वापस आयेँ
.....और महसूस करें..... कि ये कार्य तो मैं यहाँ पर बैठ कर..... कभी भी कर
सकता हूँ..... तो अब मैं रोज ये सेवा कुछ समय अवश्य करूँगा

ओमशान्ति